उतर गई दोनों पैदल चलने लगे। साथ में नंदी भी चलने लगा। अब लोग बोले, ' देखो वाहन होते हुए भी दोनों पैदल चल रहे है', तो ईसर गौरादें दोनो नंदी पर बैठ गए। लोग बोले देखो छोटे से जीव पर दोनों जने बैठे है। पार्वती बोली, भगवान दुनिया कैसी है। नंदी पर बैठने नहीं दे और पैदल चलने नहीं दे। ईसर जी बोले, पार्वती ये संसार है। यहां ऐसे ही होता है। आगे गये तो एक गाय उठती बैठती बैचेन हो रही थी। गौरादें पूछने लगी, 'भगवान ये गाय कष्ट में क्यूँ है ?' तो ईसर जी बोले, 'इसके बछड़ा होने वाला है। गौरादें बोले, 'बच्चे के लिए इतना कष्ट मुझसे सहन नहीं होगा, मेरे गांठ दे देवो। ईसर जी बोले, ' आगे चलो।' आगे गये तो घोड़ी उठ–बैठ करती हुई दिखी। गौरादें बोली, 'इस घोड़ी को क्या कष्ट है। तो ईसर जी बोले, 'इसके बच्चा होने वाला है। गौरादें बोले, 'मुझसे इतना कष्ट सहन नही होगा, मेरे गांठ दे देवो ।ईसर जी बोले, 'आगे चलो।' आगे गये तो राजा की नगरी में उदासी छायी थी। ढोल–नगाड़े उलटे थे। गौरादें पूछने लगी, 'सब यहां उदास क्यों हैं ?' ईसर जी बोले यहां रानी के कंवर होने वाला है। अब तो गौरादें जी माने नहीं बोले, 'बच्चे के लिए इतना कष्ट हो तो मुझे बच्चा नहीं चाहिए, आप मेरे गांठ दे देवो। ईसर जी को गांठ देनी पड़ी। ईसर जी ससुराल पहुंचे। पीपल के पेड़ के नीचे वास किया। गौरादें पीहर में सहेलियों के साथ मग्न हो गई । गणगौर नजदीक आयी। ईसर जी बोले आज गणगौर है। सब औरतें पूजा करने आयेगी। सवेरे से ही स्त्रियाँ पूजा करने आने लगी, गौरादें जी सभी को सुहाग बांटने लगी। दोपहर के समय बणियों की औरतें ओढ़ पहनकर सौलह श्रृंगार करके पूजा करने गीत गाती हुई आयी। गौरादें बोली, 'सुहाग तो सारा बांट दिया। ये औरतें तो अब आई हैं। ईसर बोले–गौरादें चिट्टी अंगुली जल में धोओ, नैनों का सुरमां निकालो, मांग से सिन्दूर निकालो, टीकी में से रोली निकालो और सभी स्त्रियों को अमर सुहाग दो (इस वक्त गौरादें जी के मांग का सिन्दूर, चिट्टी अंगुली की मेहन्दी, टीकी से रोली, आँखों का काजल लेके लोटे के जल में डालकर ज्वारे से सभी पूजा में आई कन्याओं व स्त्रियों के अमर सुहाग के छींटे देवें।) गौरादें ने ईसर जी के कहे अनुसार सबको अमर सुहाग दिया।